Current Affairs search results for tag: Environment

1. वायु गुणवत्ता पूर्व चेतावनी प्रणाली (AQEWS) अपनाने वाला तीसरा भारतीय शहर कोलकाता बना (Aug. 28, 2023)

बढ़ते वायु प्रदूषण से निपटने के लिए वायु गुणवत्ता पूर्व चेतावनी प्रणाली (AQEWS) अपनाने वाला कोलकाता तीसरा भारतीय शहर बना।

खबर का अवलोकन

- पुणे में **भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान (आईआईटीएम) द्वारा विकसित** यह प्रणाली का उद्देश्य **शहरी क्षेत्र में बढ़ते वायु प्रदूषण के स्तर को संबोधित करना है।**
- कोलकाता में **AQEWS वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI)** की वास्तविक समय पर निगरानी प्रदान करने के लिए एक उन्नत सेंसर नेटवर्क का उपयोग करता है।
- AQI वायु प्रदूषण के स्तर को दर्शाने वाला एक मानकीकृत माप है, जिसका **मान 0 से 500 तक** होता है।
- प्रणाली **PM2.5 (2.5 माइक्रोमीटर या उससे छोटे व्यास वाले कण)** स्तर पर ध्यान केंद्रित करती है, जो फेफड़ों में प्रवेश करने की अपनी क्षमता के कारण स्वास्थ्य समस्याओं में एक प्रमुख योगदानकर्ता है।

कोलकाता में वायु प्रदूषण की स्थिति:

- कोलकाता गंभीर वायु प्रदूषण का सामना कर रहा है, जो मुख्य रूप से PM2.5 जैसे प्रदूषकों से प्रेरित है।
- हाल के AQEWS माप से पता चलता है कि AQI 74 है, जो **30 अगस्त तक 170 से ऊपर बढ़ने का अनुमान** है।
- ये पूर्वानुमान वायु प्रदूषण से निपटने की तात्कालिकता पर प्रकाश डालते हैं और प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों की भूमिका पर जोर देते हैं।

डेटा एकीकरण और सटीकता:

- AQEWS सटीक वायु प्रदूषण पूर्वानुमान उत्पन्न करने के लिए राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता नेटवर्क और उपग्रह स्रोतों से डेटा को एकीकृत करता है।
- सितंबर 2022 में शुरू किए गए प्रायोगिक चरण के दौरान सिस्टम की सटीकता साबित हुई थी।
- पूरे भारत में **420 वायु गुणवत्ता निगरानी स्टेशनों से डेटा का समावेश वायु गुणवत्ता का आकलन** करने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है।

केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री - **भूपेन्द्र यादव**

2. बीएचईएल ने बिजली संयंत्रों में NOx उत्सर्जन को रोकने के लिए भारत का पहला उत्प्रेरक सेट बनाया (Aug. 26, 2023)

भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (बीएचईएल), एक सरकारी इंजीनियरिंग फर्म है जिसने थर्मल पावर प्लांटों से NOx उत्सर्जन को नियंत्रित करने के लिए पहले स्वदेशी चयनात्मक उत्प्रेरक रिएक्टर (एससीआर) का सफलतापूर्वक उत्पादन किया।

खबर का अवलोकन

- एससीआर उत्प्रेरक पहले **'मेक इन इंडिया' पहल के अनुरूप आयात किए** जाते थे।
- घरेलू एससीआर उत्प्रेरक का प्रारंभिक बैच **तेलंगाना में 5x800 मेगावाट यदाद्री थर्मल पावर स्टेशन** के लिए निर्मित किया गया था।
- उद्घाटन कार्यक्रम बीएचईएल की बेंगलुरु सोलर बिजनेस डिवीजन इकाई में हुआ, जिसका नेतृत्व **औद्योगिक सिस्टम और उत्पाद निदेशक रेणुका गेरा** ने किया।
- बीएचईएल ने थर्मल पावर प्लांटों में NOx उत्सर्जन को कम करने के लिए एससीआर उत्प्रेरक का उत्पादन करने के लिए अपनी सौर बिजनेस डिवीजन इकाई में एक विनिर्माण सुविधा स्थापित की।
- कोयला जलाने से इसकी **नाइट्रोजन कंटेंट नाइट्रोजन ऑक्साइड (NOx)** में परिवर्तित हो जाती है, जो एक प्रमुख वायु प्रदूषक है जिसमें **NO, NO2 और N2O** जैसे पदार्थ शामिल होते हैं।
- NOx के गंभीर पर्यावरणीय प्रभाव को पहचानते हुए, **तेलंगाना राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड (TSGENCO) ने यदाद्री थर्मल पावर स्टेशन के लिए SCR इकाइयों का आदेश दिया।**
- एससीआर इकाइयों के लिए अन्य ऑर्डर **महाराष्ट्र स्टेट पावर जेनरेशन कंपनी लिमिटेड (MAHAGENCO), पश्चिम बंगाल पावर डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड (WBPDCL) और विभिन्न थर्मल पावर स्टेशनों के लिए NALCO** से आए।
- बीएचईएल पर्यावरण संरक्षण के लिए समर्पित है, जो थर्मल पावर प्लांटों के लिए पर्यावरण-अनुकूल प्रौद्योगिकियों की एक श्रृंखला की पेशकश करता है, जिसमें उच्च दक्षता वाले बॉयलर, इलेक्ट्रोस्टैटिक प्रीसिपिटेटर, फ़्लू गैस डिसल्फराइजेशन इकाइयां और चयनात्मक उत्प्रेरक रिएक्टर शामिल हैं।
- बीएचईएल ने एससीआर प्रौद्योगिकी के विकास के लिए कोरिया गणराज्य की अग्रणी कंपनी नैनो के सहयोग से प्रौद्योगिकी का स्वदेशीकरण हासिल किया।

भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (बीएचईएल):

- यह भारत में **एक प्रमुख केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम** है।

- इसे सरकारी स्वामित्व के तहत बिजली उत्पादन उपकरणों का सबसे बड़ा निर्माता होने का गौरव प्राप्त है।
- बीएचईएल भारत सरकार के एक हिस्से के रूप में काम करता है और भारी उद्योग मंत्रालय के दायरे में आता है।
- स्थापना - **1956**
- मुख्यालय - **नई दिल्ली**

3. कुलडीहा वन्य जीव अभ्यारण्य को लेकर एनजीटी की कार्रवाई: अनाधिकृत खनन (Aug. 22, 2023)

NGT-action-regarding-Kuldiha-Wildlife-Sanctuary-Unauthorized-mining

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने ओडिशा के कुलडीहा वन्यजीव अभ्यारण्य में अनधिकृत खनन को संबोधित करने के लिए हस्तक्षेप किया।

खबर का अवलोकन

- कुलडीहा वन्य जीव अभ्यारण्य के पर्यावरण-संवेदनशील क्षेत्र में अनधिकृत खनन की शिकायत उठाई गई।
- सिमिलिपाल-हडगढ़-कुलडीहा-संरक्षण रिजर्व, विशेष रूप से सुखुआपाटा आरक्षित वन क्षेत्र के पास 97 रेत खनन स्थल पट्टे पर दिए गए।
- इन खनन गतिविधियों ने वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980 का उल्लंघन किया है, और पारिस्थितिकी तंत्र और वन्य जीवन को नुकसान पहुंचा सकता है।
- सुप्रीम कोर्ट के फैसले (बिनय कुमार दलेई और अन्य बनाम ओडिशा राज्य और अन्य) का संदर्भ दिया गया था, जिसमें संकेत दिया गया था कि खनन केवल एक व्यापक वन्यजीव प्रबंधन योजना को लागू करने और पारिस्थितिकी हाथी गलियारे के संरक्षण के बाद ही होना चाहिए।

कुलडीहा वन्यजीव अभ्यारण्य:

- उत्तरपूर्वी ओडिशा में सिमलीपाल राष्ट्रीय उद्यान के निकट स्थित है।
- 272.75 वर्ग किमी में फैला, पूर्वी हाइलैंड्स के नम प्रणपाती वन क्षेत्र का हिस्सा।
- सुखुपाड़ा और नाटो पहाड़ी श्रृंखलाओं के माध्यम से सिमलीपाल राष्ट्रीय उद्यान से जुड़ा हुआ है।
- मिश्रित प्रणपाती वनों में साल वृक्षों का प्रभुत्व है।
- इनमें बाघ, तेंदुए, हाथी, गौर, सांभर, विशाल गिलहरियाँ, पहाड़ी मैना, मोर, हॉर्नबिल, प्रवासी पक्षी और सरीसृप शामिल हैं।

मयूरभंज हाथी रिजर्व:

- सिमलीपाल और हदगढ़ वन्यजीव अभ्यारण्य के साथ-साथ मयूरभंज हाथी रिजर्व का हिस्सा।
- स्थानीय नाम: टेंडा हाथी रिजर्व, हाथियों को सुरक्षा प्रदान करता है।

4. प्रधानमंत्री मोदी ने उन्नत खेती के लिए सल्फर-लेपित उर्वरक 'यूरिया गोल्ड' लॉन्च किया (Aug. 1, 2023)

प्रधान मंत्री मोदी ने अपनी राजस्थान यात्रा के दौरान "यूरिया गोल्ड" नामक एक नई प्रकार की यूरिया लॉन्च की।

खबर का अवलोकन

- यूरिया गोल्ड सल्फर से लेपित है, जो मिट्टी की गुणवत्ता बढ़ा सकता है और किसानों के खर्च को कम कर सकता है।
- यूरिया गोल्ड, जिसे सल्फर कोटेड यूरिया (एससीयू) के रूप में भी जाना जाता है, यूरिया की एक नई किस्म है जिसे खेतों में कम लगाने की आवश्यकता होती है और फसल की गुणवत्ता में सुधार होता है।
- लॉन्च का उद्देश्य किसानों के लिए मिट्टी की उर्वरता के मुद्दों और कम इनपुट लागत को संबोधित करना है, जिससे यूरिया गोल्ड मौजूदा नीम-लेपित यूरिया की तुलना में अधिक आर्थिक और गुणात्मक रूप से बेहतर विकल्प बन जाता है।
- सल्फर लेपित यूरिया धीरे-धीरे नाइट्रोजन छोड़ता है, और ह्यूमिक एसिड मिलाने से उर्वरक के रूप में इसकी शेल्फ लाइफ बढ़ जाती है।
- एक रिपोर्ट के अनुसार, 15 किलोग्राम यूरिया गोल्ड का उपयोग करने से 20 किलोग्राम पारंपरिक यूरिया के बराबर लाभ मिलता है, जिससे यह किसानों के लिए अधिक कुशल और प्रभावी विकल्प बन जाता है।

5. भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने हीट इंडेक्स लॉन्च किया (July 24, 2023)

Indian-Meteorological-Department-(IMD)-launched-heat-index

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने हाल ही में परीक्षण के आधार पर देश के विभिन्न क्षेत्रों के लिए ताप सूचकांक पेश किया।

खबर का अवलोकन

- इसकी घोषणा केंद्रीय पृथ्वी विज्ञान मंत्री किरण रिजिजू ने की।
- ताप सूचकांक को भारत के गर्म क्षेत्रों में उच्च तापमान के कारण होने वाली असुविधा के स्तर के बारे में सामान्य मार्गदर्शन और जानकारी प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

- ताप सूचकांक जारी करके, आईएमडी का उद्देश्य लोगों को अत्यधिक तापमान से बेहतर ढंग से निपटने में मदद करने के लिए गर्मी से संबंधित स्थितियों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करना है।

हीट इंडेक्स के बारे में:

- **हीट इंडेक्स का उद्देश्य:** भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) द्वारा लॉन्च किए गए हीट इंडेक्स का उद्देश्य उच्च तापमान पर आर्द्रता के प्रभाव के बारे में जानकारी प्रदान करना है। यह मनुष्यों के लिए "अनुभव जैसा" तापमान की गणना करता है, जो दर्शाता है कि मौसम की स्थिति किस प्रकार असुविधा पैदा कर सकती है।

- **प्रायोगिक कार्यान्वयन:** हीट इंडेक्स वर्तमान में आंध्र प्रदेश राज्य सहित पूरे देश में प्रायोगिक आधार पर लागू किया जा रहा है। यह सूचकांक की सटीकता और प्रासंगिकता का परीक्षण और परिशोधन करने की अनुमति देता है।

- **विशिष्ट शहरों के लिए हीट इंडेक्स:** हीट एक्शन प्लान के तहत, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) भुवनेश्वर और अहमदाबाद जैसे विशिष्ट शहरों के लिए हीट इंडेक्स आकलन करने के लिए भारतीय सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थान (आईआईपीएच) जैसी स्थानीय एजेंसियों के साथ सहयोग करता है।

- **रंग-कोडित प्रणाली:** हीट इंडेक्स मौसम की स्थिति की गंभीरता को बताने के लिए रंग-कोडित प्रणाली का उपयोग करता है:
-
    - हरा: प्रायोगिक ताप सूचकांक 35 डिग्री सेल्सियस से नीचे।
    - पीला: प्रायोगिक ताप सूचकांक 36-45 डिग्री सेल्सियस की सीमा में।
    - नारंगी: प्रायोगिक ताप सूचकांक 46-55 डिग्री सेल्सियस की सीमा में।
    - लाल: प्रायोगिक ताप सूचकांक 55 डिग्री सेल्सियस से ऊपर।

ताप सूचकांक का महत्व:

- लोगों को इस बात की बेहतर समझ प्राप्त होती है कि आर्द्रता उच्च तापमान को कैसे प्रभावित करती है, जिससे मौसम की स्थिति की अधिक सटीक धारणा बनती है।

- हीट इंडेक्स अत्यधिक गर्मी के कारण संभावित स्वास्थ्य जोखिमों और असुविधा के स्तर की पहचान करने में मदद करता है।

- हीट इंडेक्स को जानकर, व्यक्ति असुविधा को कम करने और गर्मी से संबंधित स्वास्थ्य समस्याओं से बचने के लिए आवश्यक सावधानी बरत सकते हैं।

- दिन के न्यूनतम और अधिकतम तापमान की रिपोर्ट करने के साथ-साथ, हीट इंडेक्स यह भी जानकारी प्रदान करता है कि वर्तमान तापमान कैसा लगता है, आर्द्रता के स्तर को ध्यान में रखते हुए।

- हीट इंडेक्स जनता को सटीक और प्रासंगिक जानकारी देने के लिए हवा के तापमान और सापेक्ष आर्द्रता डेटा का उपयोग करता है।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग:

- इसकी स्थापना 15 जनवरी 1875 को हुई थी और यह भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के तहत संचालित होता है।

- विभाग मुख्य रूप से मौसम संबंधी अवलोकन करने, मौसम पूर्वानुमान प्रदान करने और भूकंप विज्ञान से संबंधित गतिविधियों के संचालन के लिए जिम्मेदार है।

- इसका मुख्यालय, जिसे मौसम भवन के नाम से जाना जाता है, नई दिल्ली में स्थित है।

6. भारत के पीएफआरडीए ने पेंशन फंड के लिए सॉवरेन ग्रीन बांड को मंजूरी दी (July 24, 2023)

India's-PFRDA-approves-Sovereign-Green-Bonds-for-pension-funds

भारत में पेंशन फंड नियामक और विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) ने पेंशन फंड में सॉवरेन ग्रीन बॉन्ड (एसजीबी) को शामिल करने की मंजूरी दी।

खबर का अवलोकन

- सरकार द्वारा जारी किए गए इन बांडों का उपयोग पर्यावरणीय पहलों पर केंद्रित परियोजनाओं को वित्तपोषित करने के लिए किया जाएगा।

सॉवरेन ग्रीन बांड में पीएफआरडीए के निवेश का महत्व:

- **सतत परियोजनाओं को आगे बढ़ाना:** पेंशन फंड को एसजीबी में निवेश करने की अनुमति देने का निर्णय पर्यावरण की दृष्टि से लाभकारी परियोजनाओं के लिए धन के सीधे आवंटन की सुविधा प्रदान करता है, जिससे भारत के सतत विकास उद्देश्यों में योगदान मिलता है।

- **पर्यावरण के अनुकूल पेंशन पोर्टफोलियो**: पेंशन फंडों को अपने निवेश पोर्टफोलियो में एसजीबी को शामिल करने की अनुमति देने से उनकी हिस्सेदारी में विविधता आती है और ऐसे निवेशों की बढ़ती मांग के साथ संरेखित होता है जो सामाजिक रूप से जिम्मेदार और पर्यावरण के अनुकूल हैं।

- **पर्यावरण के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता:** सॉवरेन ग्रीन बांड जारी करना पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने और हरित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए सरकार के समर्पण को दर्शाता है।

- **सतत निवेश के बारे में जागरूकता बढ़ाना:** पेंशन फंड में सॉवरेन ग्रीन बांड को शामिल करने से खुदरा निवेशकों के बीच टिकाऊ निवेश के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ सकती है। परिणामस्वरूप, यह वित्तीय निर्णय लेने के लिए अधिक सूचित और सामाजिक रूप से जिम्मेदार दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है।

सॉवरेन ग्रीन बांड (एसजीआरबी):

- यह सरकार द्वारा जारी बांड हैं जो पर्यावरण और जलवायु से संबंधित परियोजनाओं को वित्तपोषित करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।

- ये बांड निवेशकों को सरकार की गारंटी के साथ रिटर्न अर्जित करने का अवसर प्रदान करते हैं, जिससे उनके निवेश में सुरक्षा की भावना आती है।

- सॉवरेन ग्रीन बांड का मुख्य उद्देश्य **उन पहलों और परियोजनाओं को वित्तपोषित करना है जिनका उद्देश्य पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करना और स्थिरता को बढ़ावा देना है।**

- सरकारें विशेष रूप से पर्यावरणीय परियोजनाओं के लिए धन जुटाने के लिए ये बांड जारी करती हैं, जो जलवायु मुद्दों से निपटने और हरित पहल को बढ़ावा देने के लिए उनकी प्रतिबद्धता का संकेत है।

- ग्रीन बांड एक प्रकार की ऋण सुरक्षा है जो उन परियोजनाओं के लिए पूंजी जुटाने में मदद करती है जिनका पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है या जलवायु परिवर्तन शमन और अनुकूलन प्रयासों में योगदान होता है।

पेंशन फंड नियामक और विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) के बारे में

- यह भारत में पेंशन को विनियमित करने के लिए जिम्मेदार है और इसे 2003 में वित्त मंत्रालय के तहत स्थापित किया गया था।

- पीएफआरडीए का मुख्य उद्देश्य **वृद्धावस्था आय सुरक्षा को बढ़ावा देना और राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) ग्राहकों के हितों की रक्षा करना है।**

- पेंशन फंड नियामक और विकास प्राधिकरण के **अध्यक्ष दीपक मोहंती** हैं।

भारत में राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस):

- यह एक परिभाषित-अंशदान पेंशन प्रणाली है जो पीएफआरडीए के दायरे में आती है।

- एनपीएस को अपने ग्राहकों के सर्वोत्तम हित में योजना की संपत्तियों और निधियों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए भारतीय ट्रस्ट अधिनियम 1882 के तहत बनाया गया था।

7. चीन में कार्यक्रम: हूलोक गिब्बन के संरक्षण पर चर्चा (July 20, 2023)

Events-in-China-Discussion-on-the-conservation-of-the-Hoolock-gibbon

यह बैठक 7 से 9 जुलाई तक चीन के हैनान प्रांत के हाइकोउ में हुई। इसका आयोजन ग्लोबल गिब्बन नेटवर्क (जीएन) द्वारा किया गया था।

खबर का अवलोकन

हूलॉक गिब्बन: भारत का एकमात्र वानर

- पहले, वैज्ञानिकों का मानना था कि भारत में वानर की दो प्रजातियाँ थीं: पश्चिमी हूलॉक गिब्बन और पूर्वी हूलॉक गिब्बन।

- हैदराबाद स्थित सेंटर फॉर सेल्युलर एंड मॉलिक्यूलर बायोलॉजी के एक हालिया अध्ययन से पता चलता है कि भारत केवल एक वानर प्रजाति, हूलॉक गिब्बन का घर है।

हूलॉक गिब्बन की विशेषताएं

- हाइलोबैटिडे परिवार से संबंधित, हूलॉक गिब्बन पृथ्वी पर 20 गिब्बन प्रजातियों में से एक है।

- अपने ऊर्जावान गायन प्रदर्शन के लिए जाने जाने वाले इन वानरों की आबादी लगभग 12,000 होने का अनुमान है।

- वे वानरों की सबसे छोटी और तेज़ प्रजाति हैं, जो उच्च बुद्धि और मजबूत पारिवारिक बंधन प्रदर्शित करते हैं।

वितरण और आवास

- हूलॉक गिब्बन बांग्लादेश, पूर्वोत्तर भारत, म्यांमार के कुछ हिस्सों और दक्षिण-पश्चिम चीन सहित एशिया के दक्षिणपूर्वी हिस्से में उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जंगलों के मूल निवासी हैं।

- भारत में, वे ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिण और दिबांग नदी के पूर्व के बीच पूर्वोत्तर में अद्वितीय हैं।

- हूलॉक गिब्बन आबादी को कई खतरों का सामना करना पड़ता है, जिसमें बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए वनों की कटाई, निवास स्थान का विनाश, मांस के लिए शिकार और मानव अतिक्रमण शामिल हैं।

संरक्षण के प्रयास

- हूलॉक गिबन्स की सुरक्षा के लिए, संरक्षणवादियों ने असम की तर्ज पर समर्पित गिब्बन वन्यजीव अभयारण्यों की स्थापना का प्रस्ताव रखा है।

- कानूनी सुरक्षा, उनके आवासों में सीमित बुनियादी ढांचे का विकास और मानव अतिक्रमण और अवैध शिकार को नियंत्रित करने के प्रयास भी आवश्यक हैं।

संरक्षण स्थिति

- 1990 के दशक के बाद से, हूलॉक गिब्बन की आबादी में काफी गिरावट आई है, जिससे सभी 20 गिब्बन प्रजातियां विलुप्त होने के उच्च जोखिम में हैं।

- IUCN लाल सूची पिछले वर्गीकरण को बनाए रखती है, जिसमें पूर्वी हूलॉक गिब्बन को कमजोर और पश्चिमी हूलॉक गिब्बन को लुप्तप्राय के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

- दोनों प्रजातियाँ भारतीय (वन्यजीव) संरक्षण अधिनियम 1972 की अनुसूची 1 में शामिल हैं।

ग्लोबल गिब्बन नेटवर्क (जीजीएन)

- 2022 में चीन के हाउकोउ में स्थापित, जीजीएन का उद्देश्य गायन गिब्बन और उनके आवासों की रक्षा करना है, जो एशिया की अद्वितीय प्राकृतिक विरासत का एक अभिन्न अंग हैं।

- जीजीएन गिब्बन संरक्षण के लिए सहभागी संरक्षण नीतियों, कानूनों और कार्यों को बढ़ावा देने की कल्पना करता है।

8. रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व (आरवीटीआर) में पहली बार तीन बाघ शावकों का जन्म (July 19, 2023)

राजस्थान के बूंदी में रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व (आरवीटीआर) में पहली बार तीन बाघ शावकों का जन्म हुआ।

खबर का अवलोकन

- यह महत्वपूर्ण घटना एक टी-102 नाम की बाघिन को पार्क में स्थानांतरित करने के एक साल बाद घटी।

- रिजर्व में बाघों की संख्या अब बढ़कर पांच हो गई है, जिसमें टी-115 नाम का एक नर बाघ और टी-102 नाम की बाघिन शामिल है, जो रणथंभौर बाघिन टी-73 की बेटी है।

- पिछले जन्म के दौरान, बाघिन ने नवंबर 2020 में चार शावकों को जन्म दिया, लेकिन उन्हें नर बाघ टी-115 या अन्य जंगली जानवरों ने मार डाला।

- नवजात शावकों की सुरक्षा और अस्तित्व सुनिश्चित करने के लिए, बाघिन को क्षेत्र से स्थानांतरित करने की योजना पर काम चल रहा है, क्योंकि नर बाघ उनके लिए खतरा है।

रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व:

- रामगढ़ विषधारी वन्यजीव अभयारण्य को **5 जुलाई 2021 को बाघ अभयारण्य नामित** किया गया था क्योंकि इसे एनटीसीए द्वारा सैद्धांतिक मंजूरी दी गई थी।

- इसे **1982 में राजस्थान वन्य पशु और पक्षी संरक्षण अधिनियम, 1951** नामक एक राज्य अधिनियम के तहत वन्यजीव अभयारण्य का दर्जा दिया गया था।

- यह **राजस्थान के बूंदी जिले में स्थित** है।

- इसका **कोर एरिया 481.9 वर्ग किमी और बफर एरिया 1019.98 वर्ग किमी** है।

- इस टाइगर रिजर्व से **मेज़ नामक नदी गुजरती है जो चंबल नदी की सहायक नदी** है।

- इस अभ्यारण्य में बाघों की कुल आबादी पाँच है जिसमें एक नर बाघ, एक बाघिन और तीन नवजात शावक शामिल हैं।

9. उत्तर प्रदेश के दुधवा टाइगर रिजर्व में दुर्लभ पक्षी 'जेर्डन बैबलर' देखा गया (July 16, 2023)

'जेर्डन बैबलर' नामक एक दुर्लभ और विश्व स्तर पर लुप्तप्राय पक्षी प्रजाति को हाल ही में उत्तर प्रदेश के दुधवा टाइगर रिजर्व (डीटीआर) के घास के मैदानों में देखा गया था।

खबर का अवलोकन

- सर्वेक्षणकर्ताओं के अनुसार, भारत में 'जेर्डन बैबलर' 95% से अधिक असम और अरुणाचल प्रदेश से हैं।

- जेर्डन बैबलर ऊंचे/लंबे घास के मैदानों में जोड़े में छोटे झुंडों में रहता है।

- विश्व स्तर पर संकटग्रस्त इस पक्षी को 1994 से अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN) द्वारा 'असुरक्षित' के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

वितरण एवं संरक्षण प्रयास

- इससे पहले, जेर्डन बैबलर हरियाणा और पंजाब में सतलज नदी के किनारे पाया जाता था। हालाँकि, निवास स्थान के नुकसान के कारण, यह प्रजाति अब मुख्य रूप से असम और अरुणाचल प्रदेश में पाई जाती है।

- नोएडा स्थित हैबिटैट्स ट्रस्ट, जैव-विविध पक्षी आबादी का समर्थन करने के लिए क्षेत्र में घास के मैदानों की रक्षा करने की दिशा में काम करता है।

- उनके प्रयासों का उद्देश्य **पारिस्थितिक कार्यक्षमता को बहाल करना और प्रजातियों और मनुष्यों दोनों की भलाई को बढ़ावा देना है।**

- वैश्विक जनसंख्या का लगभग **30% जेर्डन बैबलर भारत में पाया जाता है।**

जेर्डन बैबलर के बारे में:

- यह भारतीय उपमहाद्वीप के आर्द्रभूमियों और घास के मैदानों का मूल निवासी एक पासरीन पक्षी है।

- इसका वैज्ञानिक नाम **क्राइसोम्मा अल्टिरोस्ट्रे** है।

- यह पैराडॉक्सोर्निथिडे परिवार के जीनस क्रिसोमा का सदस्य है।

- यह **बांग्लादेश, भारत, म्यांमार, नेपाल, पाकिस्तान** में पाया जाता है।

- यह पूरे वर्ष नदी मार्गों के पास रहता है, जहां यह घने नरकटों और ऊंचे घास के मैदानों में निवास करता है।

10. तमिलनाडु के ऑथूर पान के पत्तों को भौगोलिक संकेत (जीआई) प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ (July 15, 2023)

Tamil-Nadu's-Authoor-betel-leaves-get-Geographical-Indication

तमिलनाडु के थूथुकुडी जिले के ऑथूर पान के पत्तों को तमिलनाडु राज्य कृषि विपणन बोर्ड और नाबार्ड मदुरै एग्रीबिजनेस इनक्यूबेशन फोरम द्वारा भौगोलिक संकेत (जीआई) प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया है।

खबर का अवलोकन

- ऑथूर पान के पत्तों के उत्पादकों का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्था, ऑथूर वट्टारा वेत्रिलाई विवसायिगल संगम को जीआई प्रमाण पत्र प्रदान किया गया है।
- भौगोलिक संकेत के रूप में यह मान्यता ऑथूर पान के पत्तों के विपणन के लिए नए अवसर खोलती है।
- प्रमाणपत्र ऑथूर पान के पत्तों को घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विपणन करने की अनुमति देता है, जिससे विभिन्न बाजारों में उनकी पहुंच बढ़ जाती है।
- यह मान्यता ऑथूर पान के पत्तों की विपणन क्षमता को भी उजागर करती है और बढ़ती मांग और लोकप्रियता का मार्ग प्रशस्त करती है।

ऑथूर पान के पत्तों के बारे में

- यह अपने मसालेदार और तीखे स्वाद के लिए जाना जाता है, और इसका उपयोग विशेष रूप से मंदिर उत्सवों, गृहप्रवेशों और शादियों जैसे विशेष अवसरों के दौरान किया जाता है।
- यह अनोखा पान विशेष रूप से तमिलनाडु के थूथुकुडी जिले में स्थित ऑथूर गांव में पाया जाता है। थमिराबरानी नदी की उपस्थिति, जो सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराती है, स्वानीय खेतों में इसकी खेती में योगदान देती है।
- ऑथूर पान के पत्तों की खेती लगभग 500 एकड़ के विशाल क्षेत्र में होती है, जिसमें मुक्कनी, ऑथूर, कोरकाई, सुगंथलाई, वेल्लाकोइल और अन्य मुक्कनी गांव जैसे क्षेत्र शामिल हैं। इन पत्तियों की विशेषता उनके लंबे डंठल हैं और ये तीन अलग-अलग किस्मों में उपलब्ध हैं: नट्टुकोडी, कर्पूरी और पचैकोडी।
- तमिल संस्कृति में ऑथूर सुपारी के सांस्कृतिक महत्व को **13वीं शताब्दी की पुस्तक 'द ट्रेवल्स ऑफ मार्को पोलो (द वेनेटियन)' में** उनके उल्लेख से उजागर किया गया है। इसके अलावा, उनके ऐतिहासिक मूल्य और महत्व को विभिन्न प्राचीन पत्थर शिलालेखों में देखा जा सकता है।

भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग:

- यह उत्पादों को एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र से उनकी उत्पत्ति का संकेत देने के लिए दिया गया बौद्धिक संपदा अधिकार का एक रूप है।

- यह प्रमाणीकरण उन उत्पादों को प्रदान किया जाता है जिनमें अद्वितीय गुण होते हैं या उस विशेष क्षेत्र से निकटता से जुड़ी प्रतिष्ठा होती है।

- जीआई टैग के लिए पात्र होने के लिए, किसी उत्पाद पर एक विशिष्ट चिह्न होना चाहिए जो एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र से इसकी उत्पत्ति को इंगित करता है।

- भारत में जीआई टैग देने की जिम्मेदारी चेन्नई स्थित भौगोलिक संकेत रजिस्ट्री की है।